भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 22 अंक : 6 | शनिवार, 26.6.99 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

मुक्त की माया

जड़ और चेतन का विवेक एकांतिक स्थितप्रज्ञ ब्रह्मस्वरूप सत्पुरुष द्वारा ही समझ में आता है। वचनामृत सारंगपुर 10-11, मध्य 67 के मुताबिक समझदारी के फर्क से मुक्तों के अनंत भेद बनते हैं। वह भगवान की ही निर्गुण शक्ति व सामर्थ्य के कारण है। यहाँ गुणातीतानंदस्वामी साधकों के परम साधक तत्त्व के रूप में मूल ब्रह्म की अनिवार्यता और आवश्यकता की प्रतीति कराते हैं। महाराज को जैसे हैं वैसे पहाचानने, पाने और प्राप्त करने मूल अनादि अक्षरब्रह्म-जो कि महाराज को अखंड दिव्य रूप में धारण करके रहे हैं, उनकी विशिष्टता प्रमाणित करते हैं। पढ़ो-वचनामृत अमदावाद 6-7, प्रथम 63-711 साम्यावस्थारूप –गुणों की साम्यता जो हालात खड़े करती है, उसे टालने के लिए मूल अनादि ब्रह्म के साधर्म्य का होना जरूरी ही है। इससे अव्यक्त राग-प्रभुता, सत्ता और सामर्थ्य पाने का चसका पूर्णतया टल जाता है और निर्गुण महामाया जिसने कि मोहिनी रूप में सीताजी, ब्रह्मा, पराशर, च्यवन, विश्वामित्र और एकलिशृंगि जैसे को मोह में फंसा कर उनकी स्थिति में से डिगा दिया वह दूर हो सकता है। आत्मा के विकास की भूमिका में मुक्त की इस कक्षा में फिर भी डर रहता है। सो, अनादि ब्रह्म का मनन द्वारा संग या तो सच्चे परम एकांतिक अनादि मुक्त द्वारा साधर्म्य को पाकर महाराज में जुड़ जाने की जरूरत रहती है।

जीवन मुक्त, विदेहीमुक्त और ब्रह्मस्वरूप की कक्षा में वर्तते परम एकांतिक मुक्तों में समझदारी और स्थिति का फर्क रहता है। जैसे कि जनक, अंबरिष, शुकजी, शुक-सनकादिक, सीताजी, राधा, अर्जुन, उद्धव, मुख्य गोपियाँ, अक्रूर, सुदामा, नरसिंह, महेता, मीरांबाई वगैरह और दादाखाचर, मयाराम भट्ट, नित्यानंदस्वामी, मुक्तानंद, स्वरूपानंद, ब्रह्मानंद, शुकमुनि, झीणाभाई, सामंत पटेल वगैरह-वगैरह अति उत्तम अनादि मुक्त निम्न कोटि वाले मुक्तों को लीन कर सकते हैं। सो, ऐसे मुक्त अनादि ब्रह्म के अन्वय व्यतिरेक संबंध को सही रूप से जान सकते नहीं और रुपक प्रकाश योग में ब्रह्मरंध्र से आगे जाते हुए सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य व मुक्ति का सामीप्य, सालोक्य, सारुप्य और सायुज्य में फंस जाते हैं और विकास रुक जाता है। उसे सगुण माया का उत्पत्तिक्रम बाधारूप नहीं बनता, क्योंकि महाराज का संबंध है; लेकिन महाराज को जैसे पहचानने में कुछ कसर रह जाने से अनवधिकातिशय महिमा के शब्द पचा नहीं पाते। सूक्ष्म पक्ष के कारण एवं गुरुभक्ति के नाम से अभाव-अवगुण में पड़ जाते हैं जिससे कि जय-विजय और राधा व श्रीदामा जैसी स्थिति होती है।

प.पू.शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की सच्ची निष्ठा प्रमाणित करी, सर्वोपरि उपासना एवं वचनामृत लोया 12 के मुताबिक का अति उत्तम निर्विकल्प निश्चय दृढ़ करने के लिए भगीरथ प्रयत्न करके मंदिर तैयार किए। उस तत्त्वनिष्ठा में से अब प.पू. योगीजी महाराज ने संप एवं धर्म और सुहृद्भाव संघनिष्ठा के रूप में प्रर्वता कर अनेकों को अनादि मुक्तों का परमसुख, प्राप्ति और अहोर्निश आनंद मिल पाए उस हेतु मार्ग खुल्ला कर दिया है। वचनामृत प्रथम 40-43 मध्य 45, लोया 12, प्रथम 51,कारियाणी 1-7 के मुताबिक ऐसे मुक्त तैयार होते जाते हैं और जैसे कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का समागम करने का कई साधु विरोध करते और वचनामृत लोया 12 के मुताबिक का आखिरी छट्ठा

निर्विकल्प निश्चय दृढ़ करने में बाधा डालते वही-मुक्त की माया कही जाती है। महाराज का संबंध तो सभी को है लेकिन स्वरूप के प्रति की कल्पना टली नहीं, संकल्प-विकल्प मिटे नहीं। और –तब तक जीतेजी ही धाम का सुख भी नहीं मिलता। वर्ना, वचनामृत सारंगपुर 10 एवं कारियाणी 11 के मुताबिक अक्षरधाम अणुभर-जग़ा भी दूर नहीं और महाराज भी आंख की पलक झपके उतने दूर नहीं हैं। मेरी दृष्टि से अभी भी कहलाते गुरु,साधु या भक्त गलत पक्ष में रह कर ऐसे साधु का समागम करने में बाधा जो डालते हैं उन सभी को अपनी-अपनी नासमझी दूर करने की जरूरत है। ऐसी माया के सभी भावों से छूट कर अक्षरब्रह्म के साधर्म्य को पाकर, परब्रह्म पुरुषोत्तमनारायण का प्रगट सुख प्राप्त करने में आड़े आती सत्संग की ही यह मुक्त की माया दूर करने की खास जरूरत है। जो स्वयं माया से परे हो, वही माया से परे कर सकता है। बंधनमुक्त ही बंधनमुक्त करता है। हिमालय पर जो पहुँचा हो वही उसका अनुभव वर्णन कर सकता है।

कई मुक्त भगवानरूप वर्त कर साधु और संत को गौण करके ख़ुद का ही ज्ञान प्रवर्ताते हैं। महाराज थे तब कई कितने भगवान बन बैठे थे और फिलहाल भी कई कितने पूजे जाते हैं। वडताल 11 के मुताबिक प्रकाश का यह भेद ब्राह्मीस्थिति को जो पाए होते हैं वही जानते हैं। महाराज ने पामर,विषयी, मुमुक्षु और मुक्त का यह फर्क अलग-अलग वचन वचनामृतों में समय, स्थान, कथा और स्थिति को लेकर केवल हमारी समझ के लिए ही बताया है। आधी रात को कहे परावाणी के इन मूल शब्दों को सिर्फ वडनावल अग्नि सरीखे प्रगट गुरुहरि द्वारा ही समझना चाहिए और वचनामृत कारियाणी 12 के मुताबिक-उसी स्वरूप का ध्यान करके एवं वचन ग्रहण करके तेज में भी ना फंस कर आत्मा की अति उत्तम निर्विकल्प स्थिति प्राप्त कर लेनी और स्वामी सेवकभाव से निर्भयता, निडरता, नम्रता धारण करके स्वाधीन रूप से अलिप्त रह कर स्वामिश्रीजी के रहस्य, अभिप्राय,मर्जी और सिद्धांत जान कर अखंड जाग्रतता रख कर भजन किया करना तथा दूसरों को प्रगट में जोड़ना इसे ही पराभक्ति कहते हैं और यही सर्वोपरि भजन गिना जाता है। यहां काल, कर्म, माया और स्वभाव बाधारूप नहीं होते, नाही बीच में आते। यहां सिर्फ सत्पुरुष के प्रति ही आत्मबुद्धि और प्रीति दृढ़ हो जाती है व वचनामृत प्रथम 51 के मुताबिक जहां देखो वहां रामजी-यू चैतन्य में महाराज को अखंड धार कर हरिभक्तों की तथा संतों की सेवा और भक्ति हुआ करती है।

प्र.ब्र.गुरुहरि श्री योगीजी महाराज सभी हरिभक्तों को एकांतिकी भक्ति युक्त ऐसी अलौकिक गुणातीत स्थिति प्राप्त कराएं और गलत पक्ष, बड़प्पन का लोभ तथा वासना एवं महामोह व परम अज्ञान दूर करवा कर धाम, धामी और मुक्तों को स्वरूप-स्वरूपी के भाव से ब्रह्म की ही साक्षात् मूर्तियाँ समझने की दृढ़ता कायम रखवाएं व किसी का भी दोष, अवगुण व प्रकृति का कार्य मात्र नज़र में ही ना आए ऐसा बना दें यही अभ्यर्थना!

-प.पू.काकाजी महाराज
मई, 1954

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

हर साल की तरह इस साल भी प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज की जयंती की स्मृति हेतु 16 मई से 13 जून तक अनिर्देश में सुबह 6.30 से 8:15 तक जपयज्ञ-धून्य, भजन, कथावार्ता का प्रोग्राम रखा गया। लगता है-प्रभु ने स्वयं ही कब्जा लेकर जैसे तारीख निश्चित कराई हो-क्योंकि इस वर्ष पुरुषोत्तम मास का पवित्र मास जो तीन साल में एक बार आता है वो 16 मई से 13 जून तक का था। शास्त्रों में इस महिने में किए गए दान, व्रत, भजन, सत्संग आदि की बहुत महिमा बताई है। प.पू. गुरुजी द्वारा सहज ही यह तारीख अनायास ही निश्चित हो गई! प.पू.काकाजी ने प.पू.गुरुजी के रूप में जो अमूल्य भेंट-प्रभुधारक विभूति हमें दी है, उसका ऋण हम कैसे चुका पाएंगे?

प.पू. गुरुजी से आध्यात्मिक व व्यवहारिक सूझ का अमूल्य लाभ प्राप्त करने की उमंग-उत्साह मुक्तों को देखते ही बनता था। 16 मई की सुबह 6:30 बजे तो अनिर्देश में करीब दो सौ मुक्त ज्ञानगंगा में स्नान करके स्वयं को धन्य करने इकट्ठे हो चुके थे.....ठाकुरजी व गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ भी मुख पर प्रसन्नता लिए जैसे भक्तों पर आशिष बरसा रही थी। प.पू.गुरुजी जैसे ही हॉल में पधारे, तो इतनी जल्दी सब मुक्तों को आया देख आँखों में पानी भर आया। प.पू.गुरुजी ने 16 मई को ही सब भक्तों पर बहुत प्रसन्नता बताई और पूरे महीने के जपयज्ञ में करीब पाँच-छः बार अन्तर की वह प्रसन्नता बताई। दूरी ओर अपने प्यारे प.पू.गुरुजी की बाईपास सर्जरी के बाद ऐसी तबियत में भी एक महिने तक सुबह साढ़े तीन चार बजे उठ जाने की बात सुन कर, हमें सुखी करने की एकमात्र भावना-परिश्रम देख कर भक्तों का

दिल भर आता.....

अबकी बार 16 मई को मंदिर से एक अपनेपन से जुड़े प.भ. दीपचंद बन्धुजी के हाथों जपयज्ञ का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित से कराया। प.भ. दीपचंद बन्धुजी ने समय-समय पर मंदिर के कई कार्यों में अपना सहयोग दिया है। उसके लिए प.पू.गुरुजी ने उनका आभार व्यक्त किया। प.भ.बन्धुजी ने भी भक्तों की सुबह 6:30 बजे आ जाने की भावना को देखकर दिल से सराहना की।

इस बार जपयज्ञ दौरान प.पू. काकाजी की परावाणी की कैसेट प.पू. गुरुजी ने रखवाई थी। सब हरिभक्त कई सालों से इसके लिए तरसे हुए थे.....प.पू. काकाजी की कही बातें हम तो वैसे कहां समझ पाएंगे ? सो प.पू. गुरुजी एक-एक बात का खूब बारीकी से अर्थ समझाते। प.पू. गुरुजी की कथावार्ता के निरन्तर धोध से अनेक भक्तों के मन के समाधान हुए, गृहस्थों को भी आध्यात्मिकता के साथ व्यावहारिक सूझ मिली और साधकों के मन की कई गुत्थियाँ सुलझी-इस रास्ते आगे बढ़ने का सभी को बल, बुद्धि, सूझ और प्रेरणा मिली!

भगवतकृपा के अगले अंक से पहले की तरह श्रवन, मनन, निदिध्यासन शीर्षक के अंतर्गत प.पू. गुरुजी द्वारा समझाई गई बातों का सार सूत्रों के रूप में देने का प्रयास करेंगे-ताकि दूर बैठे सभी मुक्तजन भी इससे लाभान्वित हो पाएं.....

13 जून की सायं एक महिने के जपयज्ञ की पूर्णाहुति व प.पू. काकाजी की जयंती का मंगलकारी महोत्सव मनाने-भक्ति अदा करने भक्त समुदाय उमड़ पड़ा था। ठाकुरजी व गुणातीत स्वरूप गुलाब के फूलों के हारों से सुसज्जित होकर सबका मन मोह रहे थे.....

इसी दिन प.पू.काकाजी के समय से पुराने जोगी प.पू. गुरुजी के निजी व हम सब के आत्मीय स्वजन प.भ. जनार्दनभाई की षष्ठीपूर्ति का उत्सव भी मनाया..... प.पू. गुरुजी ने प.भ. जनार्दनभाई व उनके परिवार की सेवा के बारे बता कर उनकी संतों के प्रति की प्रीति, सेवा-भक्ति व निष्ठा की खूब सराहना करी व स्मृति के रूप में प.पू. काकाजी की मूर्ति भेंट दी।

फिर प.पू. काकाजी की परावाणी की कैसेट रखी। प.पू. गुरुजी भी जैसे आज सब पर लुटाने ही बैठे थे.....जो भी हरिभक्त आए हैं, वे आत्मा का कुछ भोजन लेकर ही जाएं ऐसी प.पू. गुरुजी की भावना थी। प.पू. गुरुजी ने पूरे महीने की कथावार्ता के निचोड़रूप पूरे साल के लिए निम्न मुद्दे दिएः-

प.पू.काकाजी परावाणी में बोले-मेरी फिलोसोफी कुछ अलग है। मुझे जो मान देता है, उसे मैं समझता हूँ कि वो मेरा दुश्मन है। प.पू.गुरुजी ने बात समझाते हुए कहा कि-प.पू. काकाजी ये हमें सिखाते हैं कि जब भी तुम्हें कोई खूब मान दे- ज़रा एलर्ट हो जाओ। उसमें झूलने मत लग जाओ। उसकी गुदगुदी मत होने दो.....

प.पू. काकाजी ने कुरुक्षेत्र में शिविर की इस सभा के दौरान कहा कि-.....यहाँ आए हो तो आनंद करो और जो भी ग़ीज मिलती है, उस पर भाष्य मत करना। नए-पुराने सभी के लिए मैं ये बात कर रहा हूँ।

प.पू. काकाजी द्वारा कही भाष्य की बात समझाते हुए प.पू.गुरुजी बोले-भाष्य का अर्थ समझते हो? साधु कोई ग़ीज कहे, फिर उसका अपने ढंग से इन्टरप्रीटेशन करें-वो भाष्य! हमारे स्वरूप कहें कि किसी में भेदभाव नहीं रखना। ये काकाजी बड़े, ये पप्पाजी छोटे, ये स्वामिजी तो स्वरूप हैं; वे तो साक्षात् महाराज ही हैं, बाकी तो सब मुक्त हैं। ये सब भाष्य हम अपने ढंग से जो करते रहते वो ना करें। फिर भी हम भाष्य करें कि भई संत को तो सभा में ऐसा कहना पड़ता है, लेकिन हमने जो समझा है वही ठीक है। अरे! हम अंधे लोग क्या समझेंगे? हमारे दिव्य चक्षु खुले हैं क्या? तो हम वो प्रकाश के भेद को कैसे देख पाएंगे? इसलिए सबसे अच्छा तरीका वो ही है ना कि जो संत कहते हैं, उसी पर चलें। वो भाष्य हम ना करें यह काकाजी का कहना हैं.....

प.पू. काकाजी ने परावाणी में कहा कि-.....इस शिविर में आप ब्रह्मविद्या सीखने आए हैं, शिविर में कवायत करने के लिए ट्रेनिंग लेने आए हैं..... भगवान मेरे हैं तो मेरा काम करो। यह शुरुआत हुई सब के लिए! इससे आगे-मैं तेरा बालक हूँ.....अभी मैं तेरा हूँ!! यह कुछ समझ पड़ गई.....

प.पू. गुरुजी ने इस बात का निरुपण करते हुए कहा-देखो! काकाजी हम से ये चाहते हैं कि अब तक हम ये स्टेज में थे कि भगवान आप मेरे हो। लेकिन हम उनके कब होंगे? दस-दस, पंद्रह-पंद्रह साल के बाद भी हम बोलते हैं-डिस्टर्ब हो गया। यूँ तो फिर सारी ज़िन्दगी ही चली जाएगी इस डिस्टर्बन्स के अन्दर। मैं कहता हूँ डिस्टर्बन्स आए भले। पलभर कुछ लग भी जाए। लेकिन फिर उसी को लेकर बैठे रहेंगे? प.पू. पप्पाजी से कितनी बार सुना है कि टॉयलेट में

कहीं पांव स्लीप हो गया तो क्या हम वहीं बैठे रहेंगे? उठ जाएंगे ना वहां से? यूँ डिस्टर्बन्स आ जाए, लेकिन हमें तो भगवान और संत मिले हैं। थोड़े हाथ ऊपर करेंगे तो वे उठा लेंगे तुरन्त, सपोर्ट दे देंगे। अगर ये भी नहीं करना है और हम कहें कि हम भगवान भजने के लिए निकले हुए हैं, तो या तो ये कोई बचपना है, गलतफहमी है या ढोंगबाजी जैसी बात है.....हम सब को यह ट्रेनिंग लेनी है। देखो तो सारे महीने की शिविर की फलश्रुति एक ही है कि प्रभु की हाज़िरी मान कर वर्तते हो? वे हाज़र ही हैं। गए ही नहीं है। अभी भी हम जो बात कर रहे हैं, वह वे सुन रहे हैं। सारी काकाजी की लाईफ में यही बात आई। इससे क्या होगा? इससे हम धीरे-धीरे ऐसी स्टेज पर पहुँच जाएंगे कि सब में प्रभु के दर्शन होते जाएंगे।

हम ये बातें करते हैं जरूर। पर, एक बात समझना-सब में प्रभु को देखना वो साधन नहीं है; वो साध्य चीज़ है और वो करने के लिए हमारे गुरु में हमें अनन्यभाव से जुड़ जाना पड़ेगा.....कोई पक्षी को मानो तीर लगाना हो तो एकाग्र होना पड़ता है। इसी तरह सब जगह से नज़र हटा कर एक अपने गुरु के प्रति अनन्यभाव से जुड़ जाएंगे, उसके फलस्वरूप फिर हर एक में वो गुरु की मूर्ति के दर्शन होंगे..... प.पू. स्वामिजी इसे अलग ढंग से बोलते हैं कि-तुम्हारी स्वरूप में निष्ठा होगी तभी तुम दूसरों में दिव्यभाव रख पाओगे..... उसका पहला टेस्ट यह है कि तुम्हें अपने गुरु में दिव्यभाव है? उसकी हर बात सत्य हम मानते हैं? या अपने इन्टरप्रीटेशन करते जाते हैं? अपनी कुछ वॉन्ट्स (इच्छाएँ), प्राण की भूख ये सब मानने नहीं देगी। लेकिन वो सब छोड़ना और प्रभु की बात का भरोसा करना वो ही हमें करना है.....

प.पू.काकाजी ने भी ऐसी बात करी जो मैं सारे महिने करता रहा कि काकाजी को मॉस गेधरिंग की नहीं पड़ी थी। ऐसे संत को-स्वरूप को केन्द्र में रख कर कुटुंबभाव से जीता एक आध्यात्मिक समाज का सर्जन-उनकी योजना है। यहां जो सारा समाज तैयार हो रहाहै वो ऐसा होता है। बहुत सालों पहले की बात हैं-जब ये अक्षरज्योति के लिए 78 नम्बर का फ्लैट लिया। मैंने मल्कानी साहेब को कहा था कि चलो देख आएं। वो देखने गए-तो मुझे पूछा कि यहां बहनें रहने वाली हैं? मैंने कहा-हाँ, बहनों के लिए लिया है। तो बोले कि गुरुजी पहले हम इसकी ग्रिल लगवा दें। सिक्योरिटी पहले होनी चाहिए.....इन्होंने अपने आप वहां सारी ग्रिल लगवाई। कोई डोनेशन फेंकने की बात नहीं थी, लेकिन यहां इन्टीमेसी की बात थी। इस ढंग के फेमिली काकाजी चाहते हैं वो ही बन रहा हैं.....बाकी थपाके मारने वाले पचास-साठ हजार जने-वी डोन्ट वॉन्ट धेम; हमें चाहिए ही नहीं। क्योंकि काकाजी खुद भी कभी ऐसे नहीं चाहते थे। वो साफ-साफ बोले हैं कि मैं चाहूँ तो यहां से मेरठ तक की लाईन लगा दूं, लेकिन फिर मैं तुम्हारे भाग नहीं पड़ूंगा-तुम्हारे हाथ नहीं आऊँगा। अपने को भी उसी सीस्टम पर जाना है और ऐसे भक्त-विजयपाल, मल्कानी साहेब, ये दालिया साहेब, वच्छराज, राकेशभाई, जनार्दन....किसी किसके नाम दें? पंजाब से जो आए हैं वो भी ऐसे हैं। ये काकाजी ने यहां एक नूतन समाज तैयार करा है। हमें ख्याल नहीं है कि ओहो! कैसे समाज का सर्जन यहां करा हुआ है। बस उसी बीच एक-दूसरे की हूँफ में हमें आनंद करना है। वो अगर हम नहीं कर पाते, तो हम ऐसा तो नहीं कह सकते कि-हमारी कमनसीबी है, हम तो खुशनसीब हैं कि हमें ऐसे प्रभु मिले-उन्होंने हमें ऐसा समाज दिया; लेकिन हमारी नासमझी जरूर है। इसलिए एक समझदारी रख कर जीना है.....

दूसरी जगह भगवान को ढूंढते है, भगवान को पाने की कोशिश करते हैं। हमें तो काकाजी द्वारा, पप्पाजी द्वारा, स्वामिजी द्वारा भगवान मानवस्वरूप में मिले हैं। अब उसके होकर जीना है.....काकाजी कहते थे कि जहां दूसरों के ज्ञान का अंत आता है वहां से हमारे ज्ञान की शुरुआत होती है.....हमें भगवान के होकर रहना है। वो अखंड मेरे साथ हैं.....

काकाजी की जयंती मनाएं उसका अर्थ इतना ही कि छोटी-मोटी कोई भी क्रियाएं हम करें-प्रभु को याद करके करें। प्रभु के नाम का नमक डाल कर करें-फिर अनुभवों की श्रृंखला की कतार लग जाएगी। भले ढब अपनी वही रहने दो-तुम तेज़ प्रकृति के हो तो तेज़ दौड़ों, धीमी प्रकृति के हो तो धीमे दौड़ों। हम लोग चले तो सही। काकाजी बोले थे कि अब खाली बातें सुना मत करो, चलने लग पड़ो। नहीं चलते इस लिए डर रहता है कि हमारा काम होगा कि नहीं होगा?

आज आप आए हो तो सब यह सेन्टेन्स साथ में लेकर जान कि मेरे साथ मेरे प्रभु, मेरे पिता जिसको मैं मानता हूँ-मेरा स्वरूप अखंड मेरे साथ है। ये एक सूत्र लेकर गए तो काकाजी की जयंती सही ढंग से मनाई मानी जाए। बाकी कोई ज्ञान भले समझ में आए या नहीं आए.....

दिव्याशिष.....

(12 जून.... प.पू.काकाजी की जयंती निमित्त प.पू.पप्पाजी ने डेनहाम (लंदन से) सभी मुक्तों को याद करके यह आशीर्वाद पत्र भेजा...सभी मुक्त इस आशीष से लाभान्वित हो सकें इस भावना से पत्र को यहां हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं....)

स्वामिश्रीजी

गुणातीत समाज की जय

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय

12.6.99-प.पू. काकाजी महाराज की जन्म तारीख।

काकाजी मंडल के सभी अक्षरमुक्तों-

आज पू.काकाजी महाराज की जन्म तारीख का उत्सव है।

तो हम महापूजा करके

सारे गुणातीत समाज के अक्षरमुक्तों के लिए

स्वामिश्री और प्रत्यक्ष गुणातीत समाज के गुणातीत स्वरूपों को प्रार्थना करते हैं कि-

प.पू. काकाजी महाराज अपने जीवन की हर एक मुसीबत-प्रॉब्लम्स

प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप को प्रार्थना करके ही हल करते थे;

हम सभी उनका यह गुण ग्रहण करें

और

जीवन में जो भी मुसीबतें आएं वह प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप को प्रार्थना करके हल करें

और

निरन्तर अक्षरधामस्वरूप ही रह कर बापा का परिश्रम सफल करें।

तुम्हारे ही-

पप्पा के जय स्वामिनारायण!

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

592. सुबह तड़के भगवान का भजन करना या कथा करनी ऐसा त्रिलोक में कोई ना मिले व और सब कुछ करें, लेकिन कथा नहीं करेंगे। रुपिये, हवेली, विवाह, खाना, मजदूरी के चक्कर में सुबह से लग पड़ते हैं। मैं तो जैसे फिरंगी परेड करवाते हैं, वैसे करवाता हूँ। कई कितने काम बाजु में रखवा कर जबरदस्ती करवाते हैं, वर्ना तो कहां हो ऐसा है? एक काम निपटा नहीं है कि दूसरे ही पल मनुष्य और करने लग पड़ता है। यह तो वृत्ति को रोक कर करवाते हैं। और..करना तो यही है । यह करे से जीव वृद्धि को पाता है। प्र-6,86

593. निर्मल अंतःकरण से यूं देखना कि-जो-जो बात बनती है, वह इस साधु से ही होती है। यह सत्संग

पहचाना गया और भगवान व साधु पहचाने गए- यही मोक्ष का द्वार बताया है। ...दरवाजे के अलावा दीवार में कितना ही सिर कूटेंगे, बाहर नहीं निकल पाएंगे। सो ऐसे साधु के साथ जीव जोड़ना। संस्कार के बिना यूं इकट्ठे हो नहीं सकते और संस्कार हो, वही भगवान को अखंड धारे। ऐसा संबंध हो तब तो ठीक, वर्ना तो सांख्य का काम पड़ता है और प्रकृति के रूप को समझ रखें तब निर्विघ्न रहा जाए.....

प्र-6,87

594. सभा के समय कथा में कई बैठते नहीं है और दो-दो आसान रखते हैं, वे क्या समझते होंगे? ऐसे कहने वाले नहीं मिलेंगे। गोपाळानंदस्वामी थे तब भी उनके साधु कोई नहीं बैठते थे और दूसरे आकर बैठते थे-ऐसा है.....सुख तो भगवान की मूर्ति, आज्ञा और एकांतिक साधु में हैं.....दो घोड़ों पर एक साथ सवारी नहीं हो सकती-लोट फांकना और हंसना।.....यूं मंदिर में बड़े साधु के पास से जो शांति मिलती है वैसी घर में नहीं रहती ऐसा सभी को है। लेकिन गर्मियों में ठंडक मिलती है या बरसात होने पर? यह बताओ। और अब हम जो सभी इकट्ठे हुए हैं, सो मन में ऐसा है कि-कसर टाल कर भगवान के चरणार्विंद में जुड़ना है।तो जैसे व्यापार में, धर्मशाला में, बगीचे में,खेती में आग्रह रखते हैं, वैसा इसमें रखेंगे, तभी महाराज के पास जा पाएंगे और खेती-बाड़ी में तो बंधन होगा। इसमें तो कुछ माल नहीं। तो क्या यह सब नहीं करना चाहिए? करना-लेकिन देह का व्यवहार चल जाए उतना करना। पहले प्रहर, डेढ़ प्रहर रात को उठ-उठ कर जब विचार को पाएंगे और भगवान को धारेंगे, तभी साधु हो पाएंगे, फिर भगवान के पास जा पाएंगे। रखवाली करने वाले, पढ़ने वाले,कमाने वाले जैसे जागते हैं यूं जगना।

प्र-6,89

595. निश्चय है, लेकिन ऋषभदेव नरक में पड़े रहे ऐसे चरित्र करे तो संशय होता है। सो, योग्य – अयोग्य कैसे भी चरित्र में उद्धवजी की तरह संशय ना हो तभी ठीक.....उसके लिए सात्त्विक का सेवना करना चाहिए। जो-जो करें ज्ञान से-समझ से हो वह ठीक, क्योंकि गीता में ज्ञानी को ही आत्मा कहा है। बड़ों की क्रिया देख कर कभी उन्हीं के ढंग से करने नहीं लग पड़ना। पर वे कहें वैसा करना। यूं तो आग जल से बुझती है, पर बिजली की अग्नि जल में रहने के बावजूद भी नहीं बुझी। क्रिपानंदस्वामी ने बात करी कि पनडुबी पानी में रहती है तो भी पंख पानी भर जाता है, तो वे उड़ नहीं सकते। मछली का एक प्रकार है जो जाल में फंसती नहीं, बल्कि जाल को काट कर कई मछली को छुड़वाती है। ऐसा क्रिपानंदस्वामी जैसे कर पाएं।

प्र-6,90

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 9.7.99 शुक्रवार - एकादशी, व्रत
(2) दि. 24.7.99 शनिवार - देवशयनी एकादशी, व्रत, चातुर्मास प्रारंभ

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II,
New Delhi-110 064 Tel.: 5401210, 5402393

TO,